दैवी गुणों को नष्ट करता है-अहंकार

दैवी गुण मानव जीवन की सुन्दरता है। इसकी सुगन्ध सारे जहाँ को सुगन्धित करती है। इसकी सुगन्ध में हर एक मनुष्य एक सुख और शान्ति की अनुभूति करता है, परन्तु इस जीवन क्षेत्र में अन्तरावलोकन वृत्ति न होने से ऐसे अवांछनीय अवगुणों का उद्‌भव होता है जिसकी दुर्गन्ध इस सुगन्ध को नष्ट कर देती है। इसी तहर से एक राजा था उसने एक बड़ा सुन्दर बगीचा बनाया। उसमें उसने सत्य, प्रेम, ईमानदारी और सच्चाई, भक्ति, ज्ञान इत्यादि के पौधे लगाए। इन पौधों की राजा स्वयं संभाल करता। उनमें खाद-पानी देता। पौधे बड़े होने लगे। उन पर फूल खिले। उन फूलों में ऐसी महक थी कि सारा नगर और राज्य की बड़ाई होने लगी। राजा फूलकर कुप्पा हो गया। कुछ ही दिनों में राजा ने देखा, बगीचे में एक नन्हा सा पौधा अपने आप उग आया है। बड़े-बड़े पौधों के बीच उस पौधे का क्या मूल्य हो सकता था। राजा ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। जब वह पौधा तेजी से बढ़ने लगा तो राजा ने उसे उखाड़ने की कोशिश नहीं की सोचा कोई बात नहीं। पड़ा रहने दो। थोड़े दिन बीते कि उसने एक वृक्ष का रूप धारण कर लिया। उस पर फूल खिले। फूल इतने सुंदर थे कि जो भी देखता, देखता रह जाता। लेकिन उनमें इतनी भयंकर दुर्गंध थी कि लोगों को सहन करना कठिन था वे नाक बंद कर लेते। राजा हैरान था कि यह कौन सा वृक्ष है कि जिसके फूल तो इतने सुंदर है पर जिसकी गंध इतनी असहनीय है। उसने बहुतों से पूछा, पर कोई नहीं बता सका।

एक दिन एक साधू राजा के यहाँ आया। राजा ने उसे वह वृक्ष दिखाया और पूछा कि वह किस चीज का है? साधू ने इस पर निगाह डाली, फिर हंसकर बोला, 'राजन, यह अहंकार का विषवृक्ष है इसे लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। यह अपने आप उग आता है और तेजी से बढ़ता है। इसके फूल बड़े लुभाने होते है, लेकिन इनकी बदबू इतनी होती है कि दूसरे फूलों की खुशबू को मिटटी में मिला देती है। इससे जो बचता नही, उसकी वैसी ही हालत होती है, जैसी आपक बगीचे की हुई है।

इसी तरह से मनुष्य का जीवन एक कर्मक्षेत्र है और सच्चाई, ईमानदारी, सहिष्णुता, प्रेम, सद्‌भावना जीवन में फूल की भांति है। इसकी सुगन्ध ऐसी होती है जो सबको आकर्षित करती है। जब मनुष्य के अन्दर यह गुण विद्यमान होते है तो वह संसार में ज्ञान और इज्जत का सबसे धनी हो जाता है। उससे दूसरों को कुछ न कुछ मिलता रहता है। इसमें यश और इज्जत धनी होने पर यदि साधक सावधान नहीं होता है तो तुच्छ, अवांछनीय अवगुणों का उद्‌भव होने लगता है। यह इतना सूक्ष्म होता है कि आन्तरिक दृष्टि तेज न होने के कारण इसे परखना मुश्किल हो जाता है और वह धीरे-धीरे एक वृक्ष का रूप ले लेता है। अहंकार रूपी वृक्ष की उत्त्पत्ति ईष्या, द्वेष, मान, अपमान से होती है। और दैवी गुणों के समकक्ष अहंकार अपने ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर लेता है जिसके साथ छोटे-छोटे अवगुण अंश और वंश के रूप में उसके साथ अपने आप ही आ जाते है। इन अवगुण का देहअभिमान के कारण होता है। जब मनुष्य देहाभिमान के कुचक्र में फंसने लगता है तो उसमें महामहनीय व्यक्तित्व की आभा समाप्त होने लगती है और दैवी गुणों की खुशबू के बजाए अहंकार की बदबू आने लगती है। अहंकारी व्यक्ति को तो बड़ा सुन्दर लगता है परन्तु

उसके सम्पर्क-सम्बन्ध में आने वाले लोगों को उसकी बदबू असहनीय होती है।

कहते है **झुकता वही जिनमें जान होती है, अकड़े रहना तो खास मुर्दे की पहचान होती है**। अर्थात अहंकार के जाल में फंसे व्यक्ति को गलत भी सही लगने लगता है। वह कभी झुकने को तैयार नहीं होता है। अपने को संसार में वह सबसे बड़ा और महान समझने लगता है। मान, अपमान की आग उसे जलाती रहती है। उसका स्वभाव गर्म तवे की तरह हो जाता है जिस तरह से गर्म तवे पर पानी की बूंद डालने पर एक सेकेण्ड में समाप्त हो जाता है उसी तरह उसके उपर ज्ञान जल नहीं ठहरता है। वह अपने को सबसे बड़ा बुद्धिमान, बलशाली और रंग रूप से सुन्दर समझता है। वह अपना दोष भी दूसरों के उपर मढ़ने लगता है। ऐसे व्यक्तियों की परख उसके बोल, चाल-चलन से भी प्रतीत होने लगती है। मनुष्य अथवा साधक को यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि यह केवल धन, बल और रंग रूप के ही कारण नही होता है बल्कि पद, पोजीशन और यश की बढ़ती ख्याति के बीच भी इसका जन्म हो जाता है। अहंकार एक ऐसा भूत है जिसके वशीभूत मनुष्य विवेक शून्य हो जाता है और अच्छे, बुरे, लोक, लाज की सारी मार्यादाओं को ताक पर रखकर कर्म करने लगता है। परिवार, समाज, भाई-बहन, माता, पिता की भी परवाह नहीं रहती। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, जो उसकी विनाश का कारण बनता है। रावण बहुत बड़ा बलशाली, बुद्धिमान तथा जाति का पंडित भी था, परन्तु अहंकार के अवगुण ने उसे समाप्त करके ही छोड़ा। अहंकार मनुष्य के पतन की जड़ है।

इस संसार के श्रेष्ठ प्राणी मनुष्य को प्रत्येक समय आत्मनिरीक्षण करते रहना चाहिए। जिससे बदबूदार फूल वाले अवांछनीय अवगुणों की उत्पत्ति न हो सके। अपने अन्दर दैवी गुणों को सदैव पल्लवित करते रहना चाहिए। परमात्मा शिव अवतरित होकर दैवी गुणों को धारण करने की श्रेष्ठ विधि बता रहे है। तथा अवगुणों को परखने के लिए दिव्य दृष्टि प्रदान करते है। परमात्मा का यही संदेश है कि सभी मनुष्यात्मायें मेरे बच्चे हो जिस तरह से मैं ज्ञान और गुण का सागर हूँ उसी तरह से तुम आत्माओं के अन्दर भी ये गुण निहित है। इसे जानकर इसे जागृत करो और दैवीगुणधारी बनो। ईष्या, द्वेष, अहंकार ये सब तुम्हारे नहीं बल्कि ये रावण अर्थात माया की जागीर है। इस रावण राज्य में मेरी मत पर चलकर श्रेष्ठ दैवी गुणों को धारण करो तो रावण के बन्धन से छूट जायेंगे।

समय की रफ्तार को देखते हुए समस्त मानवजाति को देहअभिमान, अहंकार छोड़ नम्रता धारण कर मानवीय मुल्यों से स्वंय को ऐसा खुशबूदार फूल बनाना चाहिए जिससे पूरा समाज सुवासित हो। अहंकार में जलते रहना तो अल्पबुद्धि की पहिचान है इसलिए परमत को छोड़ ईश्वरीय मत पर चलकर स्वयं को दैवी गुणों से भरपूर कर लेना चाहिए जिससे एक ऐसे बगीचे का निर्माण हो सके जहाँ केवल सबको सुख देने वाली खूशबू का साम्राज्य हो और एक नवीन युग की स्थापना हो। तो आईये हम अपना आन्तरावलोकन कर अपने अन्दर छिपे अहंकार के शत्रु को ईश्वर की मदद से निकाल फेंके तथा एक खुशबूदार फूल बने।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com